

## निदेशक का सन्देश

प्रिय मित्रो,

इससे पहले कि हम वर्ष-2022 को अलविदा कहें, मैं आपके साथ उन उल्लेखनीय उपलब्धियों को साझा करना चाहता हूँ जो भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने वर्ष-2022 के दौरान हासिल की हैं। कोविड 19 वैश्वक महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षण के पश्चात अब संस्थान में कक्षाएँ तथा प्रयोगशालाओं में शैक्षणिक गतिविधियाँ पुनः शुरु हो गई हैं। साथ ही, संस्थान के विभिन्न 79 स्नातक और स्नातकोत्तर शैक्षणिक कार्यक्रमों में छात्रों की संख्या 3329 से बढ़कर 4065 हो गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने उदार कलाओं (लिबरल आर्ट्स) के विकास को सुगम करने और मानविकी तथा सामाजिक विज्ञान के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए स्कूल ऑफ़ लिबरल आर्ट्स की



स्थापना की है। स्कूल ऑफ़ लिबरल आर्ट्स ने डिजिटल प्रौद्योगिकियों और कला के विभिन्न रूपों के मध्य परस्पर क्रिया करने हेतु आर्ट एंड डिजिटल इमर्शन (एडीआई) उत्कृष्टता केंद्र का शुभारंभ किया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने दो विशेष शैक्षणिक केंद्र नामशः - (क) सेंटर फॉर एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी फॉर एजुकेशन (सीईईटी) और (ख) सेंटर फॉर रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑफ़ साइंटिफिक इंस्ट्रुमेंटेशन (सीआरडीएसआई) भी स्थापित किए हैं।

संस्थान ने नए अंतर्विषयी कार्यक्रम भी शुरू किए हैं जिनमें रोबोटिक्स और मोबिलिटी में एमटेक; ऑगमेंटेड और वर्चुअल रियलिटी; इंटेलिजेंट कम्युनिकेशन सिस्टम; डिजिटल फॉरेंसिक तथा साइबर सुरक्षा में सीपीएस और एमएस, रसायन विज्ञान और भौतिकी में विशेषज्ञता वाला चार वर्षीय बीएस कार्यक्रम प्रमुख है। संस्थान ने कंप्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरिंग और धातुकर्म एवं सामग्री इंजीनियरिंग में संयुक्त पीएचडी कार्यक्रमों के लिए बफ़ेलो युनिवर्सिटी, यूएसए के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं।

इसके साथ ही, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने कई अंतर्विषयी अनुसंधान सहयोगी संबंधी पहलुओं को भी क्रियान्वित की हैं, जिसमें 1. डीआरडीओ-उद्योग-अकादमिक उत्कृष्टता केंद्र (डीआई-सीओई), भा.प्रौ.सं. जोधपुर की स्थापना; 2. एआईओटी फैब लैब; 3. आयुटेंक; 4. डीप-टेक बायो डिजाइन सेंटर फॉर मेडिकल टेक्नोलॉजी; 5. आईआईटीजे - जल जीवन मिशन “सेंटर फॉर सस्टेनेबल ड्रिंकिंग वॉटर”; और 6. MeITY सेंटर फॉर एडवांस्ड सिक्वॉरिटी टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट इन साइबर-फिजिकल सिस्टम्स इत्यादि सम्मिलित हैं।

नवाचार के क्षेत्र में छात्रों से लेकर स्टार्ट-अप के कई हितधारकों को 1. आईआईटीजे-टिस्क (IITJ - TISC) प्रौद्योगिकी नवाचार और स्टार्ट-अप केंद्र; 2. आईआईटी जोधपुर टेक पार्क; 3. जोधपुर सिटी नॉलेज एंड इनोवेशन फाउंडेशन (जेसीकेआईएफ), और 4. आईहब दृष्टि इत्यादि संस्थान परिसर में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। हमने जोधपुर जिले के ग्रामीण स्कूलों में मेंब्रेन-असिस्टेड सोरप्शन प्रोसेस पार्टिसिपेशन के आधार पर 11 जल शोधन इकाइयाँ स्थापित करने की पहल की है। हम जोधपुर सैन्य स्टेशन में सीवरेज वाटर मैनेजमेंट के कार्य में भी सहभागिता कर रहे हैं।

संस्थान ने इस वर्ष 8वें दीक्षांत समारोह के दौरान स्नातक उत्तीर्ण करने वाले छात्रों को 516 डिग्रियाँ प्रदान कीं। साथ ही, 2022 में बी.टेक का 97% प्लेसमेंट (नियुक्ति), एम.टेक का 75% प्लेसमेंट, एम.एससी का 52% प्लेसमेंट और एमबीए स्नातकों का 100% प्लेसमेंट दर्ज किया। हमने संस्थान की गतिविधियों में छात्रों अधिकाधिक सक्रिय सहभागिता हेतु छात्र गतिविधियों के बोर्डों का पुनर्गठन किया है जिससे परिसर में विभिन्न सहशैक्षणिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा।

मैं आपके सक्रिय समर्थन और उत्साही योगदान से पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के सभी पहलुओं के निरंतर विकास की आशा करता हूँ तथा भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के सभी संकाय सदस्यों, अधिकारियों एवं कार्मिकों को नए साल की बधाई देता हूँ।

प्रो. शांतनु चौधुरी

## आईयूएमआरएस-आईसीए (IUMRS-ICA) -2022

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर, मैटेरियल्स रिसर्च सोसाइटी ऑफ इंडिया और इंटरनेशनल यूनियन ऑफ मैटेरियल्स रिसर्च सोसाइटी की ओर से एशिया अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन - 2022 (IUMRS-ICA 2022) का आयोजन संस्थान परिसर में 19 से 23 दिसंबर 2022 के दौरान किया गया। इस सम्मेलन ने अत्याधुनिक अनुसंधान और विकास के वैश्विक आदान-प्रदान के साथ-साथ सामग्री विज्ञान (मैटेरियल साइंस) के सभी क्षेत्रों में अनुसंधान आवश्यकताओं और संभावनाओं की पहचान के लिए एक मंच प्रदान किया। इस सम्मेलन ने उपस्थित प्रतिभागियों/ शोधकर्ताओं को सामग्री विज्ञान में सबसे हालिया प्रगति से अवगत कराया और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अग्रणी शोधकर्ताओं के साथ बौद्धिक आदान-प्रदान के लिए एक मंच प्रदान किया। युवा पीढ़ी इसी तरह इस सम्मेलन से बुनियादी सामग्री विज्ञान अनुसंधान और उसके विकास को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित हुई।



आईयूएमआरएस समारोह की आधिकारिक शुरुआत के साथ उद्घाटन सत्र में प्रो. महेश कुमार ने प्रतिभागियों/ शोधकर्ताओं को संबोधित किया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के निदेशक प्रो. शांतनु चौधुरी ने स्वागत भाषण दिया जिसमें उन्होंने शोधकर्ताओं के करियर में इस प्रकार के सम्मेलनों की भूमिका पर जोर दिया। प्रो. पी.एस. अनिल कुमार, सचिव एमआरएसआई ने एमआरएसआई के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। प्रो. एस.बी. कृपानिधि ने IUMRS-ICA 2022 सम्मेलन के सभी प्रतिनिधियों को उद्घाटन भाषण से संबोधित किया। आईयूएमआरएस और यूरोपीय विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष प्रो. रोड्रिगो मार्टिंस ने अध्यक्षीय भाषण दिया और सम्मेलन सार पुस्तिका का अनावरण किया। प्रो. एस.पी. तिवारी द्वारा संक्षिप्त धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सम्मेलन का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ।

सम्मेलन में उपस्थित शोधकर्ताओं / प्रतिभागियों का मुख्य विषय सेमीकंडक्टिंग सामग्री और उपकरणों के बारे में संवाद को बढ़ावा देना था जिसे प्रत्येक सत्र के पश्चात लघु-उत्तरीय प्रश्न, प्रतिभागियों के बीच पूर्ण-समूह चर्चा और वक्ताओं के साथ लघु-समूह चर्चा आयोजित करके पूर्ण किया गया।

एमआरएसआई ने प्रख्यात शोधकर्ताओं को नामित किया, जिन्होंने सामग्री विज्ञान के क्षेत्र में सफलता हासिल की है और उनके योगदान को स्वीकार करते हुए पदक से सम्मानित किया गया था। कैब्रिज यूनिवर्सिटी, यूके की प्रो. जूडिथ ड्रिस्कॉल ने पिछले एक दशक में अपने उत्कृष्ट कार्य के लिए "एमआरएसआई सिल्वर जुबली इंटरनेशनल मेडल" प्राप्त किया। आईआईएससी बैंगलोर के प्रो. जी यू कुलकर्णी को प्रतिष्ठित "सीएनआर राव प्राइज इन एडवांस मैटेरियल्स" से सम्मानित किया गया। आईआईएससी बैंगलोर के ही प्रो. डी डी सरमा को पदक के साथ "एमआरएसआई विशिष्ट सामग्री वैज्ञानिक ऑफ द ईयर" के खिताब से सम्मानित किया गया। सेंटर फॉर नैनोसाइंस एंड टेक्नोलॉजी, भुवनेश्वर के प्रोफेसर कुलमणि परिदा और एआरसीआई हैदराबाद के डॉ. टाटा नरसिंह राव को "एमआरएसआई सामग्री विज्ञान वार्षिक पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, देश भर में अपने क्षेत्र में सक्रिय योगदान देने वाले युवा प्रोफेसरों और वैज्ञानिकों को 12 एमआरएसआई पदक प्रदान किए गए।

साभार – डॉ. महेश कुमार

## प्लाज्मा -2022

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के भौतिकी विभाग द्वारा प्लाज्मा साइंस सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीएसएसआई) के सहयोग से 12 से 14 दिसंबर 2022 तक प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित 37वीं राष्ट्रीय संगोष्ठी (प्लाज्मा -2022) का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे युवा तथा वरिष्ठ शोधकर्ताओं को प्रेरित करना था। संगोष्ठी में मुख्य भाषण, विस्तृत वार्ता, प्रख्यात वैज्ञानिकों द्वारा आमंत्रित वार्ता के साथ-साथ शोध विद्वानों और अन्य प्रतिभागियों द्वारा मौखिक एवं पोस्टर प्रस्तुतियां शामिल रही। संगोष्ठी, प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में युवा शोधकर्ताओं को भारत के प्रतिष्ठित प्लाज्मा वैज्ञानिकों के साथ वार्तालाप करने और उनके शोध कार्य को प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करेगी।



परमाणु ऊर्जा विभाग (डीएई), वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) इत्यादि की विभिन्न अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशालाओं और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, केंद्रीय विश्वविद्यालयों, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (एनआईटी), विभिन्न इंजीनियरिंग महाविद्यालयों जैसे अकादमिक संस्थानों ने अपनी भागीदारी प्रदान की।

यह सर्वविदित है कि पिछले कुछ दशकों में, सामान्य रूप से प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के परिदृश्य और विशेष रूप से नियंत्रित थर्मोन्यूक्लियर संलयन में विस्तृत रूपांतरण हुआ है। निरंतर बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने और प्राकृतिक प्रक्रियाओं के साथ सामंजस्य बनाए रखने के लिए परमाणु संलयन रिएक्टरों के निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। प्रयोगशालाओं में अंतरिक्ष और एस्ट्रोफिजिकल प्लाज्मा में बुनियादी प्लाज्मा प्रक्रियाओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के अलावा प्लाज्मा के औद्योगिक अनुप्रयोगों ने माइक्रो-इलेक्ट्रॉनिक्स, नई सामग्री, पर्यावरण और ऊर्जा प्रौद्योगिकियों की उन्नति में एक वास्तविक क्रांति ला दी है, जो गुणवत्ता में सुधार करने में योगदान प्रदान कर रही है। हमारे देश के वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकीविद् और इंजीनियर सीमांत क्षेत्रों में प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान और विकास कर रहे हैं। इनमें फ्यूजन अनुसंधान, प्रयोगशाला प्लाज्मा अनुसंधान, रक्षा अनुसंधान, अंतरिक्ष अनुसंधान, सामग्री विज्ञान, खाद्य विज्ञान, स्वास्थ्य, कृषि आदि शामिल हैं।



प्लाज्मा-2022 की थीम – “सतत विकास के लिए प्लाज्मा प्रौद्योगिकियां” था। हम 21वीं सदी के युग में हैं जहां आधुनिक तकनीकों ने काम को आसान बनाने में मदद की है किंतु हमारे निरंतर प्रयासों के बावजूद भी बढ़ती आबादी और मानव प्रजाति के लिए संसाधनों की स्थायी तरीके से पूरा करना प्रमुख चुनौती है। इसके साथ-साथ खाद्य पदार्थों की कमी, बढ़ते स्वास्थ्य जोखिम, आधुनिक ऊर्जा ईंधन की कमी, उच्च कार्बन उत्सर्जन के कारण पर्यावरणीय क्षति आदि कुछ चिंताएँ हैं। यह दृढ़ विश्वास है कि अत्याधुनिक प्लाज्मा प्रौद्योगिकियां इस चिंता यानी FEAR (i.e. Food/Health खाद्य / स्वास्थ्य, Energy & Agriculture Retrievals ऊर्जा और कृषि पुनर्प्राप्ति) का समाधान प्रदान कर सकती हैं।

संगोष्ठी के अंतर्गत बुनियादी प्लाज्मा भौतिकी के साथ-साथ प्लाज्मा प्रौद्योगिकी के विषय में महत्वपूर्ण प्रगति की चर्चा शामिल की गई। प्लाज्मा-2022 में शामिल मुख्य विषय : परमाणु संलयन और प्रौद्योगिकी, औद्योगिक प्लाज्मा अनुप्रयोग, लेजर प्लाज्मा, प्लाज्मा प्रसंस्करण, अंतरिक्ष और खगोल भौतिकी प्लाज्मा, बेसिक प्लाज्मा, क्रॉस डिस्प्लिनरी, एक्सोटिक प्लाज्मा (डस्टी प्लाज्मा शामिल है), प्लाज्मा डायग्नोस्टिक्स, स्पंदित शक्ति, थ्योरी और प्लाज्मा सिमुलेशन इत्यादि रहे।

प्रसिद्ध वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों, युवा शोधकर्ताओं और विश्वविद्यालय संकायों सहित संभावित राष्ट्रीय प्रतिनिधियों इत्यादि ने इस त्रिदिवसीय संगोष्ठी में शामिल होने के लिए अत्यधिक उत्साह दिखाया। संगोष्ठी में 12 सत्र शामिल किए गए जिनमें से 9 मौखिक सत्र और तीन पोस्टर सत्र थे। कुल मिलाकर 1 मुख्य भाषण, 1 पूर्ण वार्ता, 16 आमंत्रित वार्ता, 27 मौखिक वार्ता, 5- बुटि युवा वैज्ञानिक पुरस्कार प्रस्तुतियाँ, पीएसएसआई के 4 विशिष्ट पुरस्कार प्रस्तुतियों के साथ-साथ 440 पोस्टर प्रस्तुतियों सहित लगभग 490 प्रस्तुतियाँ थीं। इस कार्यक्रम में लगभग 400 से अधिक शोधार्थियों और वैज्ञानिकों ने भाग लिया। विभिन्न श्रेणियों के तहत सर्वश्रेष्ठ पोस्टर और मौखिक प्रस्तुतियों के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए।

इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि: डॉ आर चिदंबरम, पूर्व अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग और भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार; विशिष्ट अतिथि: प्रो. बिमला बूटी, पूर्व सीनियर प्रोफेसर, पीआरएल, अहमदाबाद और अध्यक्ष बूटी फाउंडेशन; विशिष्ट अतिथि: प्रोफेसर वाई.सी. सक्सेना, पूर्व वरिष्ठ प्रोफेसर और सलाहकार आईटीईआर-इंडिया, आईपीआर, गांधीनगर; स्वागत भाषण: प्रोफेसर शांतनु चौधुरी, निदेशक, भा.प्रौ.सं. जोधपुर; मुख्य वक्ता: प्रोफेसर अविनाश खरे, कुलपति, एससीयू सिक्किम; डॉ. अरुण शर्मा, डीजी, नेक्टर, दिल्ली; प्रो. शिशिर देशपांडे, आईपीआर, गांधीनगर; प्रो. अमिता दास, आईआईटी दिल्ली; प्रो. सुदीप सेनगुप्ता, आईपीआर गांधीनगर; प्रो. सुब्रतो मुखर्जी, पूर्व प्रमुख, एफसीआईपीटी-आईपीआर गांधीनगर; डॉ. रोहित शुक्ला, बीएआरसी, विजाग; प्रो. नरेशपाल सिंह सैनी, जीएनडीयू अमृतसर और अध्यक्ष पीएसएसआई; प्रो. दिव्येंदु चक्रवर्ती, पीआरएल, अहमदाबाद; डॉ. पियाली चटर्जी, आईआईए, बेंगलुरु; डॉ. पी. के. अत्रे, आईपीआर गांधीनगर; डॉ. अमित डी. लाड टीआईएफआर मुंबई; डॉ. जे.ए. चकेरा, आरआरसीएटी इंदौर के साथ कई और वैज्ञानिकों ने भी संगोष्ठी में भाग लिया।



भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के निदेशक प्रो. शांतनु चौधुरी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए यह उल्लेख किया कि "संस्थान द्वारा प्लाज्मा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के लिए बी.एस. पाठ्यक्रम प्रारंभ करने जा रहा है। भा.प्रौ.सं जोधपुर में प्लाज्मा साइंस एंड टेक्नोलॉजीज पर एक टीम सक्रिय रूप से कार्यरत है और आने वाले समय में संस्थान में बी.एस. कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहेगा। टेक्नोलॉजी इनोवेशन एंड स्टार्ट-अप सेंटर (टीआईएससी)-आईआईटीजे का पहला उत्पाद भी कोल्ड प्लाज्मा टेक्नोलॉजी पर ही आधारित था और अनुसंधान एवं विकास के लिए इस क्षेत्र का विस्तार किया जा रहा है जिससे छात्रों एवं भारतीय उद्योगों को अत्यधिक लाभ होगा।"

मुख्य अतिथि, डॉ. आर चिदंबरम ने प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी की विस्तृत क्षमताओं पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया क्योंकि इसमें बिजली उत्पादन से लेकर स्वास्थ्य तक और कृषि से लेकर विनिर्माण तक विविध क्षेत्रों में व्यापक बदलाव लाने की क्षमता है। उन्होंने नियंत्रित थर्मोन्यूक्लियर फ्यूजन के क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा किए गए योगदान का उल्लेख किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के लिए अनुसंधान की अत्यधिक मांग वाले इस क्षेत्र में योगदान करने की बड़ी संभावनाएँ मौजूद हैं। डॉ. चिदंबरम ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी दोनों पहलुओं को शामिल करते हुए एकीकृत स्नातक 'बी.एस.' पाठ्यक्रम शुरू करने के लिए प्रो. शांतनु चौधुरी की इस पहल की सराहना की। उन्होंने छात्रों से कैरियर और राष्ट्र हित में प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस पाठ्यक्रम को चुनने का सुझाव दिया।

प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान, भाट गांधीनगर के पूर्व सीनियर प्रोफेसर और आईटीईआर-इंडिया के सलाहकार प्रो. वाईसी सक्सेना ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि "प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी विविध क्षेत्रों में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। भारत को इस क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान में निवेश करके अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। नियंत्रित थर्मोन्यूक्लियर फ्यूजन कार्यक्रम में हमें विश्व के अन्य देशों से पीछे नहीं रहना चाहिए। लंबे समय से प्रतीक्षित तकनीक दुनिया के व्यावसायिक उपयोग हेतु उपलब्ध हो जाने पर हम मुश्किल में पड़ सकते हैं जब तक हमारे पास पर्याप्त प्रौद्योगिकी आधार नहीं रहेगा।"

भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (पीआरएल) अहमदाबाद की पूर्व सीनियर प्रोफेसर और बूटी फाउंडेशन की अध्यक्ष प्रो. बिमला बूटी ने कहा कि बूटी फाउंडेशन ने प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में छात्रों एवं वैज्ञानिकों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों को मान्यता देने के लिए पुरस्कारों का प्रावधान रखा है। उन्होंने भारत में प्लाज्मा विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास की सुखद यादें साझा कीं। वह देश में महिला वैज्ञानिकों को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करना चाहती हैं और उन्होंने व्यक्त किया कि वह देश में महिलाओं के लिए इस क्षेत्र में और पुरस्कारों का भी प्रावधान करना चाहती हैं।

डॉ. प्रदीप कश्यप, स्कूल ऑफ़ एडवांस्ड साइंस एंड लैंग्वेज, वीआईटी भोपाल विश्वविद्यालय द्वारा "ऑन प्रोबिंग द सोलर प्लाज्मा प्रोसेसेज थू यूवी/ईयूवी स्पेक्ट्रोस्कोपी" से संबंधित उनके कार्य के लिए परवेज गुजदार अवार्ड-2022 दिया गया। डॉ. राम प्रकाश, भौतिकी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर को उनके "समाज के लाभ के लिए निम्न तापमान प्लाज्मा अनुप्रयोग" ("Low Temperature Plasma Applications for Societal Benefits") से संबंधित उत्कृष्ट कार्य के लिए जयदत्त सरस्वती सोढा PSSI प्लाज्मा अवार्ड-2022 दिया गया।

साभार – डॉ. राम प्रकाश

## बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) पर संवादात्मक सत्र

जोधपुर सिटी कॉलेज एंड इनोवेशन फाउंडेशन (JCKIF) और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने संयुक्त रूप से 21 दिसंबर 2022 को जोधपुर क्लब ऑडिटोरियम में बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) पर एक इंटरैक्टिव सत्र का आयोजन किया। प्रो. उन्नत पी पंडित, पेटेंट, डिजाइन और ट्रेडमार्क महानियंत्रक, भारत सरकार इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। प्रो. पंडित ने "भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए आईपी संचालित समाधान" पर एक व्याख्यान दिया। प्रो. शांतनु चौधुरी, निदेशक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर और अध्यक्ष बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स, जेसीकेआईएफ ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रो. संपत राज वडेरा, उप-निदेशक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आईपीआर के महत्व को बताया।

प्रो. प्रबुद्धा गांगुली, सीईओ, विज्ञान-आईपीआर और विजिटिंग प्रोफेसर भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने "ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में भारत की स्थिति को बढ़ाने के लिए उच्च शिक्षा के संस्थानों की भूमिका" पर अपने विचार प्रस्तुत किए। भारत सरकार के शिक्षा नवाचार प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. मोहित गंभीर ने सिलिकॉन वैली, यूएसए से आने वाले नवाचारों के इतिहास के बारे में बात की और दर्शकों को गूगल और हेवलेट पैकर्ड (HP) जैसी कंपनियों के विकास में पेटेंट की भूमिका के बारे में बताया। डॉ. यशवंत देव पंवार, वैज्ञानिक एफ. और प्रमुख, पेटेंट सुविधा केंद्र (पीएफसी), प्रौद्योगिकी सूचना पूर्वानुमान एवं मूल्यांकन परिषद ने बौद्धिक संपदा के लिए दाखिल करने में तकनीकी, वित्तीय और कानूनी सहायता प्रदान करने में पेटेंट सुविधा केंद्र की भूमिका के बारे में बात की।



असंगठित क्षेत्र के शिल्प कारीगरों, निर्यातकों, संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और जोधपुर के विभिन्न संस्थानों जैसे भा.प्रौ.सं. जोधपुर, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय, एम्स, कृषि विश्वविद्यालय, निपट, एमबीएम विश्वविद्यालय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय असंचारी रोग कार्यान्वयन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर (ICMR-NIIRNCD) आदि से 260 से अधिक प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

कई प्रतिभागियों ने आईपीआर के संबंध में विभिन्न मुद्दों जैसे पेटेंट सुविधा केंद्रों की भूमिका, जीआई टैगिंग, पेटेंट की समाप्ति और नवीनीकरण, बौद्धिक संपदा दाखिल करना और राज्यों में साझा करना, और बौद्धिक संपदा के विपणन और व्यावसायीकरण की दिशा में कदम इत्यादि पर चर्चा की। कुल मिलाकर इस कार्यक्रम की प्रमुख चर्चाकर्ताओं के साथ-साथ प्रतिभागियों ने भी सराहना की।

प्रो. शांतनु चौधुरी ने अपने समापन भाषण में सभी प्रतिभागियों की चर्चा में प्रत्यक्ष भूमिका के साथ चर्चा को जीवंत बनाये रखने के लिए उनकी सराहना की और सुझाव दिया कि जोधपुर के सभी स्थानीय संस्थानों को संयुक्त रूप से काम करने के लिए जेसीकेआईएफ की छत्रछाया में आईपीआर से संबंधित विभिन्न मुद्दों के समाधान के लिए आना चाहिए। डॉ. मोनिका तंवर, सहायक प्रोफेसर, एसएमई, भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने प्रमुख चर्चाकर्ताओं और प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. जी. एस. टोटेजा, सीईओ जेसीकेआईएफ और उनकी टीम ने किया।

साभार - डॉ. जी. एस. टोटेजा

## संकाय विकास कार्यक्रम (फेकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम)

उदीयमान प्रौद्योगिकी सतत विकास केन्द्र (CETSD), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर के अंतर्गत उन्नत भारत अभियान - क्षेत्रीय समन्वयक संस्थान (UBA-RCI) के द्वारा व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और कौशल आधारित संकाय विकास कार्यक्रम कार्यशाला का आयोजन 5 से 10 दिसंबर 2022 यूजीसी-मानव संसाधन विकास केंद्र (एचआरडीसी), जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर और महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद हैदराबाद के सहयोग से आयोजित किया गया।



उद्घाटन समारोह के दौरान डॉ आनंद के प्लापल्ली, यूबीए-आरसीआई, भा.प्रौ.सं. जोधपुर ने गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया, जिनमें मुख्य अतिथि बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय राजस्थान के कुलपति प्रोफेसर अंबरीश एस विद्यार्थी और यूजीसी-एचआरडीसी, जेएनवीयू के निदेशक प्रोफेसर राजेश दुबे भी शामिल थे। डॉ अनिल दुबे ने अपने प्राथमिक लक्ष्य "भारत में ग्रामीण शिक्षा" के साथ एमजीएनसीआईआई की एक पृष्ठभूमि साझा की तथा यह भी बताया कि पिछले छह सालों से एमजीएनसीआईआई 'नई तालीम' पर जमीनी स्तर पर काम कर रहा है। उद्घाटन समारोह के बाद गणित विभाग से डॉ विवेक विजय ने "ग्रामीण शिक्षा में संस्थागत वैज्ञानिक सामाजिक उत्तरदायित्व" ("Rural Education-Institutional Scientific Social Responsibility") पर व्याख्यान दिया।



प्रतिभागियों को व्याख्यान सत्रों के दौरान निम्नलिखित सत्रों/विषयों पर चर्चा करते हुए जानकारी प्रदान की गई -

1. डॉ. शोभना सिंह द्वारा "अक्षय ऊर्जा स्रोत"
2. डॉ. सरन आधार द्वारा "मैपिंग/जियोस्पेशियल बेसिक थॉट ऑफ रूरल इंफ्रास्ट्रक्चर"
3. डॉ. अंबेश दीक्षित द्वारा "नैनो टेक के माध्यम से ग्रामीण हस्तक्षेप",
4. डॉ. मीनू छाबड़ा द्वारा "स्वच्छता योजना और जैव ऊर्जा",
4. डॉ. आनंद के. प्लापल्ली द्वारा "मानचित्रण का परिचय",
5. डॉ. आलोक रंजन द्वारा "सामुदायिक अध्ययन"
6. डॉ. नरेंद्र कुमार जैन, पूर्व निदेशक रक्षा प्रयोगशाला, डीआरडीओ द्वारा "ग्रामीण विकास और उच्च स्तरीय अनुसंधान"
7. श्री निर्मल गहलोत द्वारा "उन्नत भारत अभियान - क्षेत्रीय समन्वयक संस्थान (UBA-RCI) और परियोजनाएं"
8. सुश्री इतिशा भारद्वाज द्वारा "जल जीवन मिशन"

संकाय विकास कार्यक्रम की कार्यशाला में देश के विभिन्न राज्यों (उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश और दिल्ली) से भाग लेने वाले कुल 20 प्रतिभागियों ने संस्थान परिसर में स्थित जल जीवन मिशन और जेसीकेआईएफ का दौरा किया। संकाय सदस्यों और कर्मचारियों के साथ सभी प्रतिभागियों ने नांदिया कलां गांव का दौरा किया, जिसे उन्नत भारत अभियान के तहत भा.प्रौ.सं. जोधपुर द्वारा गोद लिया गया है। नांदिया कलां गांव में उन्होंने ग्रामीणों से उनकी संस्कृति, आजीविका के स्रोत और शिक्षा पर बातचीत की। उन्होंने नांदिया कलां के सरपंच व गांव के सरकारी स्कूल के प्रधानाचार्य से भी मुलाकात की। प्रतिभागियों ने नांदिया कलां गांव में भा.प्रौ.सं. जोधपुर के "हर घर खेती परियोजना" का भी निरीक्षण किया।

साभार -डॉ. आनंद के. प्लापल्ली

## हिंदी कार्यशाला

संस्थान के विभिन्न प्रशासनिक कार्यालयों और विभागों में कार्यरत स्टाफ सदस्यों को हिंदी टंकण, अनुवाद एवं राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग का प्रशिक्षण देने हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन 22 दिसंबर 2022 को किया गया, जिसमें समूह बी और सी स्टाफ सदस्यों (अधीक्षक, कनिष्ठ अधीक्षक, वरिष्ठ सहायक, कनिष्ठ सहायक) ने भाग लिया, जो प्रशासन से संबंधित मामलों को देख रहे हैं।



इस कार्यशाला श्री सुदेश यादव, हिंदी अनुवादक, राजभाषा कार्यालय, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (CSIR) ने राजभाषा के क्षेत्र में अपने अनुभवों को साझा करते हुए कर्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में उपनिदेशक, प्रो. संपत राज वडेरा ने कर्मिकों को हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने की सलाह दी। संस्थान के कुलसचिव, डॉ. हरिओम यादव ने राजभाषा के वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए टंकण एवं अनुवाद की उपयोगिता का वर्णन किया। कार्यशाला में प्रतिभागियों के उत्साह को देखते हुए डॉ. नितिन भाटिया, हिंदी अधिकारी ने सभी कर्मिकों का धन्यवाद दिया तथा निकट भविष्य में भी हिंदी से संबंधित विभिन्न कार्यशालाओं में भाग लेने का आग्रह किया।

## नवीन अनुगम

01.12.2022 से 31.12.2022 की अवधि के अंतर्गत संस्थान में कार्यभार ग्रहण करने वाले संकाय सदस्यों एवं स्टाफ सदस्यों की सूची

पी.एफ. सं.	नाम (डॉ, सुश्री, श्री, श्रीमती)	पदनाम	विभाग / कार्यालय	सेवारंभ तिथि
397	विग्नेश टी. जी.	असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	यांत्रिक अभियांत्रिकी	01.12.2022
399	सुरेश सरकार	असिस्टेंट प्रोफेसर ग्रेड I	रसायन विज्ञान	21.12.2022
400	अनुपमा मोहन	एसोसिएट प्रोफेसर	मानविकी और सामाजिक विज्ञान	21.12.2022
398	सिमांता दास	मल्टीमीडिया कंटेंट डेवलपर	कंप्यूटर केंद्र	12.12.2022
401	पीयूष जैसवाल	कनिष्ठ अभियंता	अवसंरचना अभियांत्रिकी	23.12.2022

## अन्य गतिविधियां

■ जैव विज्ञान एवं जैव अभियांत्रिकी विभाग द्वारा संस्थान में 13 दिसंबर 2022 (मंगलवार) को ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसे प्रो. ग्रेगरी सी. गिब्सन द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रो. गिब्सन अटलांटा, जॉर्जिया, यूएसए में जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में जैविक विज्ञान के रीजेंट प्रोफेसर हैं। व्याख्यान का मुख्य विषय "पर्सनलाइज्ड जीनोमिक मेडिसिन एक्रोस ह्युमन पोपुलेशन" (मानव आबादी भर में वैयक्तिकृत जीनोमिक चिकित्सा) रहा जिसमें संस्थान के छात्रों, संकाय सदस्यों एवं कार्मिकों ने भाग लिया।

■ भारत सरकार ने कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम, 2013 को अधिनियमित किया, जिसे POSH अधिनियम भी कहा जाता है। POSH अधिनियम कार्यस्थल पर महिलाओं को यौन उत्पीड़न से बचाता है और उनकी सुरक्षा करता है। अधिनियम और संबंधित मामलों पर जागरूकता लाने के लिए, "कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की रोकथाम अधिनियम, 2013 (पॉश अधिनियम 2013) – भा.प्रौ.सं. जोधपुर के कार्मिकों के बीच जागरूकता" पर एक ऑनलाइन सत्र 15.12.2022 को संस्थान की आंतरिक शिकायत समिति द्वारा आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में सुश्री साक्षी मेहले, एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड सुप्रीम कोर्ट ने ऑनलाइन प्रस्तुतिकरण के द्वारा अधिनियम का विस्तृत वर्णन किया गया एवं कार्मिकों द्वारा पूछे गए विभिन्न प्रश्नों का उत्तर दिया।

### राजभाषा कार्यान्वयन समिति

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर द्वारा प्रकाशित  
सर्वाधिकार सुरक्षित © 2022

### प्रबंध सम्पादक

डॉ. क्षेमा प्रकाश, उपपुस्तकालयाध्यक्षा

### अनुवाद एवं प्रकाशन सहायता

श्री अशोक गहलोत

### संपर्क

हिंदी कार्यालय, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जोधपुर  
राष्ट्रीय राजमार्ग 62, नागौर रोड, करवड,  
जोधपुर 342030



INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY - JODPUR